प्रवचन नोट्सः

''और उसे गाड़ दिया गया''

मसीह की मृत्यु, गाड़े जाना और जी उठना सुसमाचार के तीन सांसारिक पहलू हैं। यीशु ने बार-बार अपनी मृत्यु तथा पुनरुत्थान की भविष्यवाणी की थी (मत्ती 16:21; 17:22, 23; लूका 18:31-33)। उसने अपने गाड़े जाने की भी घोषणा की थी। योना के ''तीन रात-दिन जल-जन्तु के पेट में'' रहने का उदाहरण देते हुए उसने कहा था कि ''... वैसे-ही मनुष्य का पुत्र तीन रात-दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा'' (मत्ती 12:40)। बैतनिय्याह में मरियम द्वारा उसका अभिषेक किए जाने पर उसने अपने गाड़े जाने की बात साफ बता दी थी। उसने कहा था, ''जो कुछ वह कर सकी, उस ने किया; उस ने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में पहिले से मेरी देह पर इत्र मला है'' (मरकुस 14:8; देखें मत्ती 26:12; यूहन्ना 12:7)।

गाड़े जाना अपने आप में ही, दो अन्य मुख्य तथ्यों की तरह महत्वपूर्ण है; परन्तु यीशु के गाड़े जाने में उसके पहले (उसकी मृत्यु) की यादगारी घटना और उसके बाद की हृदयस्पर्शी घटना (उसका जी उठना) जुड़ी हुई थी। यीशु के गाड़े जाने का क्या महत्व है? सुसमाचार की कहानी में इसका क्या योगदान है? उसके गाड़े जाने से हमारे जीवनों पर क्या प्रभाव पड़ता है? आइए इन प्रश्नों की खोज के लिए कुछ समय दें।

कालांतर में उसका गाड़ा जाना

यीशु को मृत घोषित कर दिए जाने के बाद अरमितियाह के यूसुफ ने उसकी देह ले जाने के लिए पिलातुस से अनुमति मांगी। निकुदेमुस की सहायता से यूसुफ ने यीशु की देह को कपड़े में लपेटकर अपनी ही नई कब्र में रखा (मत्ती 27:59, 60; मरकुस 15:46; लूका 23:50-53; यूहन्ना 19:38-40)।

गाड़ा जाना एक प्रेम पूर्वक कार्य था। यूसुफ यीशु की देह को न बचाता तो उसे अपराधियों के लिए बनाई गई गुमनाम कब्र में फैंक दिया जाना था।[1]

यह एक साहसिक कार्य था। यूसुफ और निकुदेमुस ने यीशु की देह का दावा करके और उसे दफ़नाकर बहुत बड़ा जोखिम उठाया था।

यह एक आवश्यक कार्य था। व्यवस्था के अनुसार यीशु को सूर्यास्त से पहले दफ़नाया जाना आवश्यक था। इससे भी आवश्यक, *यह साबित करना आवश्यक था कि यीशु सचमुच मर चुका था जो यह बताने के लिए आवश्यक था कि वह सचमुच जी उठा।*

यह एक उपयुक्त कार्य था। लाखों लोग मरे हैं, जिनकी देहें भूमि में पड़ी हैं। ''सब बातों में अपने भाइयों के समान'' होने के लिए (इब्रानियों 2:17) आवश्यक था कि मसीह को भी ''पृथ्वी के भीतर'' (मत्ती 12:40) रखा जाता। यह भी उपयुक्त था कि जिज्ञासु आंखें संसार के सबसे बड़े आश्चर्यकर्म को न देखें।

इस कार्य की उम्मीद थी। यूसुफ और निकुदेमुस को इसका अहसास नहीं था, परन्तु यीशु का गाड़ा जाना तीन पगों वाली योजना का दूसरा पग था। यह अन्त नहीं बल्कि आरम्भ का पूर्वाभास था।

वर्तमान में हमारा गाड़ा जाना

अपने गाड़े जाने की बात करते हुए, मैं शारीरिक रूप से मरने वालों की नहीं, बल्कि बपतिस्मे में मसीह के साथ गाड़े जाने की बात करता हूं। नया नियम बपतिस्मे और मसीह के बलिदान में सम्बन्ध पर ज़ोर देता है (रोमियों 6:3, 4; कुलुस्सियों 2:12)।

यह एक प्रेमपूर्वक कार्य होना है। यदि हम यीशु से प्रेम करते हैं, तो बपतिस्मा लेने की उसकी आज्ञा का पालन भी करेंगे (यूहन्ना 14:15)।

यह एक साहसिक कार्य है। बपतिस्मा लेने के लिए साहस की और कई बार बहुत साहस की आवश्यकता होती है।

यह एक आवश्यक कार्य है। बाइबल सिखाती है कि प्रभु की आज्ञा मानने और उद्धार की आशिषें पाने के लिए बपतिस्मा एक आवश्यक भाग है (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38; गलातियों 3:26, 27)।

यह एक उपयुक्त कार्य है। यीशु का क्रूस उठाते हुए (दखें मत्ती 16:24), हमारे लिए ''उसके साथ गाड़े'' जाना भी आवश्यक है (रोमियों 6:4)। हमारे लिए पानी में सचमुच गाड़े जाने (डुबकी) का अनुभव भी उपयुक्त है, न कि सिर पर जल के बाहरी छिड़काव से।

इस कार्य की उम्मीद होती है। पानी में हमारा गाड़ा जाना केवल दूसरा कदम है।[2] तीसरा कदम ''नये जीवन की चाल चलने'' के लिए पानी रूपी कब्र में से जी उठना है (रोमियों 6:4)। यदि हम मसीही जीवन व्यतीत करते हैं, तो हमें रोमांचकारी उम्मीद मिलती है कि पृथ्वी में हमारी देहों का गाड़ा जाना अन्त नहीं है। एक दिन, हम भी, मरे हुओं में से जी उठेंगे (1 कुरिन्थियों 15:20, 23)!

टिप्पणियां

[1]अतिरिक्त विवरणों के लिए, इसी पुस्तक में ''इतिहास के तीन सबसे महत्वपूर्ण दिन'' देखें। [2]पग एक ''स्वयं'' के लिए मर जाना है (देखें रोमियों 6:6)।